वर्ण और उसके भेद

वर्ण की परिभाषा- (1) वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसका ***खण्ड या टूकडे*** **नहीं** होते हैं। (वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2) भाषा की **लघुतम इकाई** को वर्ण कहते हैं।

जैसे- लता पुस्तक पढ़ती है। वाक्य में चार शब्द है।(1)लता (2) पुस्तक (3)पढ़ती (4)है। **प्रत्येक शब्द के खण्ड करने पर प्रत्येक पृथक-पृथक इकाई जो हमारे हाथ लगती है,वही वर्ण हैं।** जैसे-'पुस्तक'- प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ-- इस प्रकार पुस्तक शब्द में **सात** वर्णो का प्रयोग हुआ है।इन सात ध्वनियों में किसी का भी खण्ड नहीं हो सकता,अत:ये वर्ण हैं।

वर्णमाला-(वर्णों का वर्गीकरण) किसी भाषा के समस्त वर्ण-समूह को वर्णमाला कहते हैं।हिंदी में कुल 52 वर्ण है।

हिन्दी में दो प्रकार के वर्ण है-स्वर वर्ण और व्यंजन वर्ण-

स्वर वर्ण- हिंदी में पहले 11 स्वर- अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,ऋ स्वीकृत है अब ऑ भी स्वीकृत स्वर है।

परिभाषा- (1) स्वर उन वर्णो को कहते हैं जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्नबाधा से होता है।(वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2)स्वर वह ध्वनि है,जिनके उच्चारण करते समय हवा अबाधगति से मुखविवर से से निकल जाती हो।(भोलानाथ तिवारी)

हिंदी स्वरों का वर्गीकरण-

(1)मात्रा के आधार पर - (क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्ध स्वर

(क)ह्रस्व स्वर-जिनका उच्चारण सामान्य समय में होता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे- अ, इ, उ, ऋ आदि।

(ख) दीर्घ स्वर- जिनका उच्चारण ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय में हो उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।जैसे-आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,आदि

(2)जीभ की स्थिति की के आधार पर-

(क)जीभ का कौन सा भाग उठता है-(i)अग्र (ii)मध्य(iii) पश्च

(ख)मुखविवर कितना खुला रहता है-(i)संवृत(ii)अर्धसंवृत(iii) अर्धविवृत(iv) विवृत

	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	इ,ई		उ,ऊ
अर्धसंवृत	ए,		ओ
अर्धविवृत	ऐ	अ	औ
विवृत			आ

(3)उच्चारण करते समय हवा मुख(मौखिक),नाक(अनुनासिक) के रास्ते निकलने पर- (क)मौखिक- अ.आ,इ,ई,उ,ऊ,ए.ऐ,ओ,औ,ऑ

(ख)अनुनासिक-अँ,आँ,इँ,ईँ,उँ,ऊँ,एँ,ऐँ,ओँ,औँ,ऑँ

(4)ओष्ठ की स्थिति के आधार पर-कुछ स्वरों के उच्चारण में होठ गुलाई(वृत्तकार)या फैले हुए(अवृत्ताकार)रहते हैं उसी आधार पर दो प्रकार-

वृत्तमुखी-उ,ऊ,ओ,औ

अवृत्तमुखी-अ,आ,इ,ई,ए,ऐ,

हिर्दी व्यंजन वर्ण-

परिभाषा- (1)स्वर की सहायता से बोला जाए उसे व्यंजन कहते हैं।(वासुदेवनंदन प्रसाद) (2) व्यंजन वह ध्वनि है,जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुखविवर

नहीं निकल पाती है। (भोलानाथ तिवारी)

हिंदी व्यंजन के प्रकार - व्यंजन के मुख्य तीन प्रकार है।(1)स्पर्श व्यंजन(2)अंतस्थ व्यंजन(3)उष्म व्यंजन

(1)स्पर्श व्यंजन-जीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ आदि किसी न किसी भाग के स्पर्श से उच्चरित व्यंजन को स्पर्श व्यंजन कहते हैं।जिनके मुख्य पाँच वर्ग हैं -

क वर्ग	क	ख	ग	ध	ङ	(कंठ)
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	(तालु)
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	(मुर्धा)
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	(दंत)
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	(होठ)

(2)अतंस्थ व्यंजन- ये जीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ को परस्पर सटाने से होता है,किंतु पूर्ण स्पर्श नहीं होता है। ये चार हैं-य,र,ल,व।

(3)उष्म व्यंजन-उच्चारण से एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न वायु से होता है। ये चार हैं-श,ष,स,ह

प्राणत्व के आधार पर- प्राणत्व के आधार पर व्यंजन के दो प्रकार है।-

(क)अल्पप्राण (ख)महाप्राण

(क)अल्पप्राण-प्राण का अर्थ है वायु और अल्प का अर्थ है थोडा अर्थात् जिनके उच्चारण में थोडा परिश्रम करना पडता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का पहला ,तीसरा और पांचवाँ वर्ण अल्प प्राण है।अंतस्थ व्यंजन भी इसी कोटि में आते हैं।

(ख)महाप्राण- महा का अर्थ ज्यादा। अर्थात् जिनके उच्चारण में अधिक परिश्रम करना पडता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का दूसरा , और चौथा वर्ण महाप्राण है। अग्रेंजी में हवा के लिए 'H' प्रयोग होता है।इसी कारण इसी वर्ग की प्रत्येक

ध्वनि के लिए अंग्रेजी में H का प्रयोग होता है।